त्रिसंध्या FAQs (हिन्दी)

1. त्रिसंध्या क्या है?

उत्तर: 'त्रिकाल संध्या' अथवा 'त्रिसंध्या' का अर्थ है दिन के तीन संध्याकालों में भगवान की पूजा एवं स्तुति करना। पंचसखाओं द्वारा लिखित 'भविष्य मालिका' में श्री दशावतार स्तोत्र, दुर्गा-माधव स्तुति एवं श्रीविष्णु षोडश नाम स्तोत्रम का प्रतिदिन तीन बार पाठ करने के निर्देश हैं। इस पाठ को ही संध्यावंदन कहते हैं।

2. त्रिसंध्या का उचित समय क्या है?

उत्तर: त्रिसंध्या दिन के तीन संध्याकालों में की जाती है। यह पूर्वाह्न (प्रातःकाल) 4-6 बजे के बीच, मध्याह्न (मध्यकाल) 11:30-12:30 बजे एवं अपराह्न (गोधूलि बेला) में 5-7 बजे के बीच की जानी चाहिए।

3. क्या त्रिसंध्या देवत्व की प्राप्ति का साधन है?

उत्तर: संध्याकाल वह समय होता है जब देवता भगवान की स्तुति करते हैं। यदि इसी समय मनुष्य भी प्रभु का ध्यान, वंदन, स्तुति आदि करते हैं तो उनमें देवताओं जैसे गुण आ जाते हैं। वर्तमान समय धर्मसंस्थापना का समय है, जिसमें सभी देवी-देवता धरती पर मनुष्य शरीर में हैं, अतः मानव समाज के पुनरुद्धार के लिए त्रिसंध्या ही एकमात्र साधन है।

4. क्या त्रिसंध्या से हमें खंड प्रलय में रक्षा मिलेगी?

उत्तर: धर्मसंस्थापना के अंतर्गत निकट भविष्य में ही अनेक आपदाएं आएंगी, जिसमें घनघोर वर्षा से आयी भीषण बाढ़ में 100 फीट ऊंचाई तक पानी आएगा, 49 प्रकार की पवन

प्रवाहित होंगी, भूकंप एवं उल्कापात आदि होंगे। ऐसे विकट समय में रक्षा का एकमात्र साधन त्रिसंध्या धारा ही है। जो लोग प्रतिदिन तीनों संध्या के समय श्रीविष्णु षोडश नाम, दशावतार स्तोत्र एवं दुर्गा-माधव स्तुति का पाठ नहीं करेंगे, उनकी रक्षा असंभव है।

5. क्या त्रिसंध्या के लिए त्रिकाल स्नान भी आवश्यक है?

उत्तर: नहीं, कलियुग के घोर प्रभाव के कारण शारीरिक शुद्धि को अधिक महत्व नहीं दिया गया है। शांत चित्त से एक शुद्ध स्थान पर बैठकर, माता गंगा का ध्यानकर त्रिसंध्या का पाठ आरंभ किया जा सकता है। श्री भगवान की चरण-धोवन माता गंगा की यह विशेषता है कि उनके ध्यानमात्र से व्यक्ति गंगा स्नान कर लेने जैसा पवित्र हो जाता है।

6. हर घर में त्रिसंध्या होनी क्यों आवश्यक है?

उत्तर: घर में जब सभी सदस्य त्रिसंध्या करते हैं तब घर में दुख, अभाव, अनाटन, रोग-महामारी आदि नहीं रहती। ऐसा परिवार भगवान महाविष्णु के समीप होता है। त्रिसंध्या करने वाले मानवों की प्रवृत्ति इतनी सात्विक हो जाती है कि वे आपदा आने पर भगवान की शरण लेते हैं, अतः मोह से मुक्त रहते हैं। त्रिसंध्या ऐसा साधन है, जो बहुत कम समय में सुदृढ़ भक्ति प्रदानकर मनुष्य को मुक्ति के मार्ग पर लाता है।

7. क्या त्रिसंध्या धारा का पालन करनेमात्र से हम सत्ययुग में जा सकते हैं?

उत्तर: त्रिसंध्या एवं श्रीमद् भागवत महापुराण के पठन से हमें दैवी कृपा प्राप्त होगी एवं हम महाप्रभु कल्कि की शरण में जा सकेंगे। त्रिसंध्या धारा के पालन से मनुष्य दीर्घायु होकर अनंतयुग में महाप्रभु के रामराज्य में 1,009 वर्ष का जीवन प्राप्त करेंगे। इस दिव्य युग में

रोग, ज्वर, व्याधि की समस्या नहीं रहेगी। दिव्य शरीर में वृद्धावस्था नहीं आयेगी एवं मानव सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

8. त्रिकाल संध्या से युवाओं के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: युवाओं को प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, जिसके द्वारा अकालमृत्यु से उनकी रक्षा होगी एवं वे सच्चे सनातनी बन पाएंगे। वर्तमान में युवा जिन मानसिक परेशानियों से ग्रस्त होकर आत्महत्या तक का महापाप कर बैठते हैं, उनसे उन्हें रक्षा मिलेगी। महाप्रभु की कृपा से त्रिसंध्या करने वाले युवा मानसिक शांति एवं आनंद का अनुभव करेंगे।

9. क्या वेदों एवं शास्त्रों में कहीं त्रिसंध्या का उल्लेख मिलता है?

उत्तर: हां, त्रिसंध्या भगवान महाविष्णु को प्राप्त करने का सबसे सरल एवं सुगम मार्ग है। पूर्व काल में कई भक्तों ने त्रिसंध्या करके भगवान महाविष्णु की प्राप्ति की थी। श्रीमद् भागवत महापुराण के अनुसार महर्षि नारद के उपदेश से भक्त ध्रुव ने त्रिसंध्या की जिससे उन्हें दुर्लभ परम पद की प्राप्ति हुई। अतः त्रिसंध्या को वेदों एवं अन्य धर्म ग्रंथों में भी साधना का महत्वपूर्ण मार्ग बतलाया गया है।

10. क्या त्रिसंध्या से आध्यात्मिक उन्नति तेज होती है?

उत्तर: त्रिसंध्या करने से मनुष्य के सभी अशुभ संस्कार नष्ट हो जाते हैं, चित्त शांत और मोह नष्ट हो जाता है। त्रिसंध्या करने से निरंतर भगवान का स्मरण बना रहता है एवं मन अन्यत्र नहीं भटकता। अतः आध्यात्मिक शक्ति में वृद्धि होने से मुक्ति का मार्ग सहज हो जाता है।

त्रिसंध्या FAQs (हिन्दी)

11. त्रिसंध्या कैसे करें?

उत्तर: त्रिसंध्या करने के लिए एक शांत एवं पवित्र स्थान चुनें। पीठ सीधी तथा मन स्थिर कर और प्रभु का ध्यान कर त्रिसंध्या का पाठ करना चाहिए।

12. त्रिसंध्या करने की पात्रता क्या है?

उत्तर: कोई भी व्यक्ति जो तीन माह से मांसाहार-मुक्त एवं व्यसन-मुक्त हो, त्रिसंध्या का पाठ कर सकता है। इसमें धर्म, जाति, कुल, वर्ण आदि की कोई शर्त नहीं है।